"अग्नि कर्म प्रकरण"

अग्निकर्म ⇒ अग्नि तप्त किये हुये उपकरणों द्वारा, शरीरगत व्याधि को नष्ट करने के लिये जो दहनकर्म किया जाता है, उसे अग्निकर्म की संज्ञा दी गयी है

अग्नि कर्म की प्रधानता ⇒ अग्निकर्म को निम्नलिखित गुणों के कारण क्षार से भी श्रेष्ठ माना जाता है।

(1) अग्निकर्म द्वारा एक बार नष्ट हुये रोग की पुनरावृत्ति (Recurrency) नहीं होती है।

(2) औषध द्वारा असाध्य रोग भी अग्नि कर्म द्वारा साध्य होते हैं।

(3) अग्नि तृप्त शस्त्र द्वारा छेदन कर्म करने पर रक्तस्राव नहीं होता है एवं व्रण में पाक नहीं होता है।

" अग्निः क्षारादपि श्रेष्ठस्तद्दग्धानामसम्भवात्।
भेषजक्षार शस्त्रैश्च न सिद्धानां प्रसाधनात्॥ (वाग्भट्ट)

अग्नि कर्म हेतु निषिद्ध ऋतुयें ⇒ शरद ऋतु एवं ग्रीष्म ऋतु

अग्निकर्म से पूर्व "पिच्छिल अन्न" सेवन का विधान है।

Scanned with CamScanner

(#) दहन उपकरण ⇒ स्थानविशेष एवं अग्नि की तीव्रता के आधार पर नि० लि० दहनउपकरण आचार्यों द्वारा बताये गये हैं।

* आचार्य सुश्रुतानुसार ⇒ पिप्पली, अजाशकृत, गोदन्त, शर-शलाका, जाम्बौष्ठ इतरलौह, मधु, गुड़, स्नेह सर्जरस, मद्यूच्छिष्ट

* अष्टांगसंग्रहकार ने उपरोक्त उपकरणों के अतिरिक्त सूर्यकान्तमणि, सूची, काँस्य, स्वर्ण आदि भी बताये हैं

(#) स्थानानुसार अग्नि कर्म हेतु उपकरण या पदार्थ ⇒

(1) त्वक् गत अग्निकर्म हेतु ⇒ पिप्पली, अजाशकृत, गोदन्त व शर, शलाका से

(2) माँसगत अग्निकर्म हेतु ⇒ जाम्बौष्ठ व धातु से।

(3) सिरा, स्नायु, संधि व अस्थि हेतु ⇒ मधु, स्नेह एवं गुड़ से।

(#) दहन के प्रकार ⇒ (4) - आचार्य सुश्रुत
(7) - आचार्य वाग्भट

* सुश्रुतोक्त (4) प्रकार ⇒
(1) वलय (2) बिन्दु
(3) विलेखा (4) प्रतिसारण

Scanned with CamScanner

* आचार्य वाग्भट्ट ⇒ सुश्रुतोक्त (4) के अतिरिक्त (3)

(1) अर्द्धचन्द्र (2) स्वस्तिक (3) अष्टपाद

अग्निदग्ध के लक्षण (स्थानानुसार) ⇒

(1) त्वक्गत ⇒ शब्दप्रादुर्भाव व दुर्गन्धिता

(2) माँसगत ⇒ कपोतवर्णी दग्धस्थल

(3) सिरागत ⇒ कृष्णोन्नत व्रण एवं स्त्राव का अभाव

(4) सन्धि व अस्थिगत ⇒ दग्ध स्थल का रुक्ष, अरुणवर्ण, कर्कश होना।

अग्निकर्म के विषय या निर्दिष्ट व्याधियाँ ⇒ अर्बुद, ग्रन्थि अपची, श्लीपद आन्त्रवृद्धि, भगन्दर में भेदनोपरान्त, गलगण्ड, मशक इत्यादि।

अग्निकर्म निषिद्ध ⇒ पित्त प्रकृति एवं भिन्नकोष्ठ वाले व्यक्तियों में तथा रक्त पित्त से पीड़ित व्यक्ति में।

* आचार्य चरकानुसार ⇒ ज्वर, तृष्णा, सविष, शल्य, स्नायु तथा मर्म स्थित व्रण, नेत्रव्रण एवं गर्भिणी में दग्ध कर्म न करने का निर्देश है।

Scanned with CamScanner

दग्ध के भेद ⇒ (4)

दग्ध (नाम)	लक्षण	चिकित्सा
(1) प्लुष्ट/तुत्थ दग्ध	त्वक् विवर्णता	उष्ण चिकित्सा (शीतल चिकित्सा निषेध)
(2) दुर्दग्ध	फफोले व तीव्रपीड़ा	शीत - उष्ण चिकित्सा (आलेप व अभ्यंग शीतल हो)
(3) सम्यक् दग्ध	तालफल वर्णी	पित्तज विद्रधिवत् चिकित्सा
(4) अतिदग्ध	माँस का लटक जाना, सिरा, स्नायु, अस्थि नाश	पित्तज विषर्पवत् चिकित्सा

आवश्यक बिन्दु ⇒

(1) इतरथा दग्ध (प्रमादवश/Accidental) ⇒ (1) DRY HEAT (BURN)
(2) MOIST HEAT (SCALDS)

(2) सभी अग्निकर्मों (दग्धों) में रोपणार्थ श्रेष्ठ है ⇒ घृत

(3) सम्यक् दग्ध होने पर शहद + घृत का लेप करते हैं।

(4) स्नेह दग्ध में रूक्ष चिकित्सा का निर्देश है।

(5) उष्ण वातातप दग्ध (HEAT STROKE) में शीतोपचार के निर्देश हैं।

Scanned with CamScanner

(6) शीत व वायु से दग्ध में उष्ण व स्निग्धोपचार निर्दिष्ट है।

(7) इन्द्रवज्राग्नि दग्ध में स्नेहाभ्यंग, परिषेक, प्रदेह आदि द्वारा चिकित्सा निर्दिष्ट है।

धूमोपहत (Suffocation By Smoke) ⇒

लक्षण ⇒ सर्वरस ज्ञान, श्रवण व गंधशक्ति का नाश।

चिकित्साक्रम ⇒ वमन → कवल → शिरोविरेचन → अन्नसेवन

अग्निकर्म विधि ⇒ शुभदिन, शुभनक्षत्र एवं मुहूर्त को देखकर, अग्निकर्म साधित व्याधियों में रोगी को पुष्टिकर एवं पिच्छिल अन्न का सेवन कराकर, पूर्व दिशा में प्रकाश की ओर मुख करके बैठे हुये रोगी में निर्धूम अग्नि में दहन उपकरणों को तप्त करके सम्यक् दग्ध के लक्षण उत्पन्न होने तक दग्ध करें।

सम्यक् दग्ध के लक्षण ⇒ रोग शान्ति, स्त्राव का नष्ट होना, एवं अंगों में लघुता इत्यादि हैं।

* मूढ़गर्भ, अश्मरी, भगन्दर तथा मुख रोगों से ग्रस्त रोगियों में बिना कुछ खिलाये अग्निकर्म करने के निर्देश हैं।

Scanned with CamScanner